पाठ 11. शिक्षा बड़ी या धन

पाठ का परिचय

एक बार एक शक्तिशाली राजा घने वन में शिकार खेलने गया। अचानक आकाश में काले बादल छा गए और मूसलाधार वर्षा होने लगी। अंधकार में राजा सिपाहियों से अलग हो गया और अपनी राह भूल गया। भटकते-भटकते राजा थकान व भूख से व्याकुल होकर जंगल के किनारे, एक टीले पर बैठ गया। उसने वहाँ से गाँव के तीन बालकों को जाते देखा। उसने उन बालकों को बुलाकर उनसे भोजन की माँग की। बालकों ने कहा कि वे अभी लेकर आते हैं। थोड़ी देर बाद बालक भोजन लेकर हाज़िर थे। भोजन करने के बाद प्रसन्न मन से राजा ने तीनों बालकों को एक-एक वरदान माँगने को कहा। एक बालक ने बहुत-सा धन माँगा। दूसरे ने बड़ा-सा बँगला और घोड़ागाड़ी। तीसरे बालक ने अच्छी शिक्षा प्राप्त करने की इच्छा प्रकट की। राजा ने तीनों की इच्छा पूरी की। जिस बालक ने धन माँगा था, वह बड़ा होने पर अपनी मूर्खता के कारण व्यापार में घाटा होने से फिर से गरीब हो गया। दूसरे बालक का सभी कुछ भूकंप ने छीन लिया और तीसरे बालक की शिक्षा ने उसे राज्य का मंत्री बना दिया। अब उसके पास धन, बँगला व गाड़ी सभी कुछ था। इसलिए कहते हैं शिक्षा ही मानव को बड़ा बनाती है, धन नहीं।

पाठ में निहित जीवन-मूल्य

जीवन में ऐसे धन का संग्रह करना चाहिए जो कभी खत्म नहीं होता है और जिसे कोई चुरा नहीं सकता है। वह धन है शिक्षा। शिक्षा मनुष्य को विनम्र, सुशील व श्रेष्ठ बनाती है। शिक्षारूपी धन पाकर व्यक्ति सर्वत्र सम्मानित होता है। शिक्षा ही वह धन है जिसे बाँटने वाला कभी गरीब नहीं होता बल्कि दिन-प्रतिदिन उसके ज्ञान का विस्तार होता है।

पाठ का वाचन

पहले अध्यापक/अध्यापिका पाठ का आदर्श वाचन करें। बच्चे पुस्तक पर सही स्थान पर उँगली रखते हुए सुनें। बच्चों से एक-एक अनुच्छेद पढ़वाएँ। बीच-बीच में कठिन शब्दों के अर्थ बताएँ। आवश्यक पंक्तियों का आशय स्पष्ट करें। पढ़े गए अनुच्छेद से संबंधित प्रश्न पूछें।

महत्वपूर्ण चर्चा

बच्चों से उनकी इच्छा और स्वप्न के बारे में बातें करें।

- बच्चों से पूछें कि उनसे यदि एक वरदान माँगने को कहा जाए तो वे क्या माँगेंगे और क्यों?
- शिक्षारूपी धन को कितने बच्चे श्रेष्ठ मानते हैं?
- विद्वान व्यक्तियों के बारे में उनके मन में क्या भावना है?
- कहानी पर आधारित यह प्रश्न भी पूछें कि तीनों बालकों में से किसने सही वरदान माँगा और क्यों?
- यदि तुम उन बालकों के स्थान पर होते तो राजा से क्या वरदान माँगते?